हंसते खेलते 10 साल की छोटी स्नेहा गिरिजाघर के आंगन में पहुंच गई। साल में एक बार होने वाला बाईबिल कन्वेंशन था आज। जहां जगह मिला वहां वो बैठ गई। उपदेशक ने भाषण शुरू किया। भाषण के बीच एक कहानी सुनाने लगे। कहानी किसको अच्छी नहीं लगती, कहानी सुनने के लिए कोई आयु थोड़ी न होती है छोटी स्नेहा भी कहानी सुनने के लिए तत्पर थी। उपदेशक बोलने लगे।

एक बार एक आदमी ने सुना कि 'मनुष्य परमेश्वर के साथ चल सकता है'। इस बात ने उसके हृदय में एक अजीब सी हलचल मचा दी। उसका हृदय परमेश्वर के साथ चलने को मचलने लगा। उसने इस तरह प्रार्थना की। "हे परमेश्वर मुझे भी आपकी आवाज़ सुनना है, आपके साथ चलना है।" उसके मन की प्रार्थना परमेश्वर ने सुन ली। वह यह सोचकर परमेश्वर से बात करने लगा कि परमेश्वर उसके साथ है। अपने खाने के मेज़ के पास और अपने बिस्तर के पास उसने एक खास जगह परमेश्वर के लिए रखा। परमेश्वर वहां बैठा है सोचकर वह बाते करने लगा। धीरे-धीरे वह परमेश्वर की आवाज़ सुनने लगा। उसकी यह चाल देखकर लोगों ने सोचा कि वह पागल हो गया है। लेकिन परमेश्वर की उपस्थिति की एहमियत पहचानकर उसने उस पर गौर नहीं किया। परमेश्वर का साथ उसको और शक्ति प्रदान करने लगा।

एक दिन सुबह जब उसकी पत्नी चाय लेकर कमरे में आई तो उसने देखा कि उसका पति बिस्तर पर लेटा हुआ है और बगल की कुर्सी पर बैठे किसी व्यक्ति का हाथ पकड़े हुए हैं, मानो कोई बैठा हो, जहां उसके पति का मानना था कि परमेश्वर बैठे हैं। बहुत बुलाने पर एहसास हुआ कि परमेश्वर के साथ चलने वाला व्यक्ति अपने प्यारे परमेश्वर का हाथ पकड़कर सुखों के स्वर्ग में उड़ गया।

कहानी सुन रही छोटी स्नेहा की आंखों से टपकने वाले आंसू को किसी के देखने से पहले ही उसने पोंछ लिया। अपना हृदय परमेश्वर को देनेवाला दिन था वो। उसने टूटे हुए दिल से प्रार्थना की "और अगर ऐसा कोई परमेश्वर है, जो मुझसे बात कर सकता है, मुझे साथ लेकर चल सकता है, और अंत में उसी हाथ को पकड़कर मुझे स्वर्गराज्य में ले जाने वाले शक्तिमय परमेश्वर को मुझे भी चाहिए।" उस नन्हें से दिल की प्रार्थना का स्वर्ग से उतर मिला। छोटी स्नेहा की ज़िंदगी में परिवर्तन होने लगा। वह पुनर्जन्म के करीब थी। (यूहन्ना 3:3) वह प्रभु के वचनों के लिए प्यासी थी वह बाइबिल पढ़ती रही। बाइबिल खोलते ही एक वचन पर उसकी आंखें अटक गई।

"तेरा वचन मेरे पांव के लिए दीपक, और मेरे मार्ग के लिए उजियाला है।
भजन संहिता **119 :105**".

ये वचन उसके आध्यात्मिक जीवन का आधार बना। उसे विश्वास हो गया कि परमेश्वर वचनों के ज़रिए ही बात करता है और इस अंधेर दुनिया में परमेश्वर का वचन प्रकाश बनकर हमें मार्ग दिखाता है। परमेश्वर ने उससे बात करना शुरू किया। सबसे पहले वचनों ने उसे पाप का बोध कराया। एक वचन ने उसे बहुत गहराई से छुआ।

"मत्ती **5:22** परंतु मैं तुम से यह कहता हूं, कि जो कोई अपने भाई पर क्रोध करेगा, वह कचहरी में दंड के योग्य होगा; और जो कोई अपने भाई को निकम्मा कहेगा वह महासभा में दंड के योग्य होगा; और जो कोई कहे "अरे मूर्ख" वह नरक की आग के दंड के योग्य होगा।"

उसको एहसास हुआ कि वो एक पापी है और उसका गुस्सा करने वाला स्वभाव और दूसरों का मज़ाक उड़ाने वाली आदत उसे नरक में पहुंचाएगा इसलिए इस पाप से भरे आदतों को उसे त्यागना होगा। उसने परमेश्वर के सामने चिल्लाया। परमेश्वर के और करीब आने पर उसे वचनों के ज़रिए और भी पापों की आदतों का एहसास दिलाया गया। वो जिस नाम मात्र इसाई समूह में थी वहां की गैर-शास्त्रीय अनुष्ठान प्रथाएं जो वचन में नही कहा गया हैं, जैसे मूर्ति पूजा, (निर्गमन **20:4-5** तू अपने लिए कोई मूर्ति खोदकर न बनाना, न किसी की प्रतिमा बनाना, जो आकाश में, या पृथ्वी पर, या पृथ्वी के जल में है। तू उन को दंडवत

न करना, और न उनकी उपासना करना।) मृतकों के लिए मध्यस्थता प्रार्थना, (1 तीमुथियुस 2:5 क्योंकि परमेश्वर एक ही है; और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात मसीह यीशु जो मनुष्य है। 2:6 जिस ने अपने आप को सब के छुटकारे के दाम में दे दिया; ताकि उस की गवाही ठीक समयों पर दी जाए।) शिशु बपतिस्मा (जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परंतु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा। मरकुस 16:16) इस सबका पालन करने की ज़रूरत नहीं है और अपने शरीर के कार्य जैसे सांसारिक प्रेम, झूठ बोलने की आदत, विभिन्न सोशल मीडिया की लत जैसे झंझीरों से झकड़कर वह नरक के द्वार की ओर बढ़ रही थी। यह सोचकर स्नेहा डर के मारे चिल्ला उठी।

"हे यीशु मुझ जैसे पापी पर दया कर"।

छोटी स्नेहा की प्रार्थना सुनकर यीशु मसीह उसे धार्मिकता की ओर ले जाते है। स्नेहा ने जैसा चाहा था वैसे ही वह परमेश्वर की आवाज़ सुनने लगी। क्योंकि परमेश्वर जो तड़पते दिलों को संतुष्ट करते हैं, वे स्वयं को उन लोगों के सामने प्रकट करेंगे जो सच्चे दिल से उन्हें खोजते हैं। स्नेहा को परमेश्वर के बारे में और भी प्रकटन प्राप्त हुआ कि सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान परमेश्वर मनुष्य द्वारा निर्मित किसी वस्तुओं में या मूर्तियों में या कुर्सियों में वास करने वाले नहीं है, बल्कि उसे पता चला कि परमेश्वर द्वारा निर्मित मनुष्य के हृदय में वास करने की इच्छा रखते है। (यशायाह 40:12, प्रेरितों के काम 7:48). स्नेहा जो परमेश्वर के साथ चलना चाहती थी उसको विश्वास के ज़रिए मसीह को अपने दिल में बसाने का वरदान मिला। (इफिसियों 3:17). जब से मसीहा उसमें वास करने लगे तब से वह फल देने लगी । (यूहन्ना 15:5) उसके बहुत से बंधुजन और दोस्तों को इस सत्य के बारे में पता चला और वे बहुतों को सत्य के मार्ग में चलाने लगे। परमेश्वर की कृपा से छोटी स्नेहा को भी परमेश्वर का मित्र बनने का सौभाग्य मिला। (यूहन्ना 15:14–15).

दोस्तों यह स्नेहा की ज़िंदगी का अनुभव था। लेकिन हम क्या कह सकते हैं? क्या हमने उद्धार पाया है? अगर हमारा जवाब हां हैं तो सच में उस दिन का स्मरण हमें बहुत खुशी देगा। अगर ऐसा एक दिन हमारे स्मरण में नहीं हैं, या यीशु के साथ व्यक्तिगत मुलाकात का अनुभव हमें बताने के लिए नहीं हैं, यदि हमारे जीवन में ऐसा कोई क्षण नहीं है जब हमने चिल्लाया हो, "मैं एक पापी हूं, ये पाप मुझे नरक में ले जाएगा। मैं पाप में नहीं जीना चाहता। हे परमेश्वर मुझे पाप से बचाओ", तो हम वास्तव में उनमें से हैं जिन्होंने उद्धार के आनंद की महिमा का अनुभव नहीं किया है। हमने उद्धार नहीं पाया है। हम व्यर्थ ही दावा करते हैं कि हमने उद्धार पाया हैं । इसलिए आज ही उद्धार पाइए, इसके लिए यह प्रार्थना अपने दिल से कहिए।

यीशु, मैं एक पापी हूं, मुझ पर दया करो। मैं विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह ही एकमात्र परमेश्वर हैं, और यीशु मेरे पापों के लिए क्रूस पर मरे, और तीसरे दिन फिर से जी उठे। इस यीशु को मैं अपना प्रभु स्वीकार करता हूं और उन्हें अपने हृदय में आमंत्रित करता हूं। (रोमियो 10:9-10)

परमेश्वर आपको आशीश दें ।

*****

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:
मलंकरा क्रिश्चियन चर्च, रामामंगलम
PH: +919496497772, +919935875709 Email: godreveals2020@gmail.com